बिनिया की नदी

शशि सबलोक

नदी का पानी बहुत साफ था। बादल ने ऊपर से देखा तो उसे अपनी परछाई दिखी। वह अभी अपने चेहरे को देख ही रहा था कि अचानक एक मछली उछली। ठीक बादल की आँख के पास। वो कुछ समझ पाता इससे पहले ही उसके गाल पर गुदगुदी-सी हुई। कोई बत्तख गुज़री थी। पानी में दिख रहा उसका चेहरा हिलने लगा था। तभी छप-सी आवाज़ सुनाई दी। यह कारस्तानी एक किलकिले की थी। फिलहाल वह चोंच में मछली दबाए एक ठूँठ पर बैठा था। बे-हलचल।

बादल को याद आया। जब पहली बार उसने बगुले को देखा था। तब लगा था कि नदी में कोई पौधा खड़ा है। थोड़ी देर बाद इसी पौधे ने दूसरी टाँग पानी में रखी और मछली पर झपट्टा मारा। तब जाकर पता चला था कि बगुले क्या गुल खिला रहे हैं।

और उस दिन...। जब बादल दोपहर बाद घूमने निकला था। सूरज बगल में चमचमा रहा था। उसने नीचे झाँका तो नदी किनारे के पेड़ पर कई छतरियाँ नज़र आईं। पेड़ पे छतरियाँ? उसे हँसी भी बहुत आई और कुछ हैरानी भी हुई। बाद में, अम्मा ने बताया, "छतरियाँ नहीं पक्षी हैं। पंख सुखा रहे हैं। मछली पकड़ने में पंख गीले हो गए होंगे।" जब तक धूप रही वे पंख फैलाए यूँ ही टँगे रहे।

पर, आज पेड़ पर कहीं छतरियाँ नज़र नहीं आ रही थीं। शायद जलकौओं (बाद में पता चला उन पक्षियों का यह नाम है) की छुट्टी होगी। तभी नदी किनारे दूर एक बड़ी-सी छतरी नज़र आई। काली छतरी। छतरी के नीचे कोई बैठा भी है। कौन होगा? बादल कुछ तिरछा हुआ, कुछ नीचे उतरा.... "अरे वाह, यह तो बिनिया है।" वह पैरों को पानी में डाले छप-छप कर रही थी। उसकी बकरी का बच्चा भी पानी में छपाके मार रहा था। बीच-बीच में वह मैं-मैं भी करता जा रहा था। थोड़ी देर बाद वह कूदता-फाँदता बाबा के पास चला गया। वे पास ही तरबूज़ की क्यारियों से खरपतवार हटा रहे थे। हरी-हरी बेलों में ज़रा-ज़रा से तरबूज़ रेत पर उगे पड़े थे।

बिनिया ने अपनी बंसी निकाली। काँटे पर केंचुए का गारा लगाया और पानी में डाल दिया। बादल उसके पास आ गया था। बिनिया ने इशारा करके उसे चुपचाप रहने को कहा। इशारों की बातें शुरू हो गई थीं। इशारों से वह कह रहा था कि चल नहाते हैं। बिनिया ने उसका कान उमेठकर बंसी की तरफ इशारा किया – दिखता नहीं, बंसी लगी है। इसी बीच बंसी पे हलचल हुई। बिनिया ने बंसी खींची पर मछली फिसल गई थी शायद। काई का बड़ा-सा गुच्छा काँटे पे फँसा था। बादल काई के गुच्छे को देखकर बोला, "बिनिया देख, बिल्कुल तेरे बालों के गुच्छे जैसा लग रहा है। इसे सँभालकर रख ले जब तेरे बाल नहीं रहेंगे तब काम आएगा।" बिनिया बस मुस्कुरा दी। काँटा फिर से नदी में पानी के बीच पड़ा था। मछलियाँ उसे छू-छूकर निकल रही थीं। इतने में एक बहती हुई बेल आकर काँटे से फँस गई। आज मछली फँसने का नाम नहीं ले रही थी। अबकी बार जब काँटा खींचा तो एक पुराने फूलों भरी पन्नी फँस आई थी। बिनिया ने इशारे से कहा – अबकी बार ज़रूर मछली फँसेगी। बादल ने कुछ इशारा किया। पर, बिनिया को समझ में नहीं आया। बिनिया ने उसके पास कान लाकर कहा, "क्या बोला? समझ में नहीं आ रहा।" "पत्थर फँसेगा।" बादल ने बिनिया के कान के पास चिल्लाकर कहा। बिनिया बोली, "नहीं, पत्थर नहीं फँस सकता है।" बादल बोला, "क्यों?" बिनिया चिल्लाकर बोली, "क्योंकि सारे पत्थर तो तेरी अकल पर पड़े सुस्ता रहे हैं।"

यह कहकर बिनिया ने घर लौटने के मन से काँटा झटके-से खींच लिया।

चित्र : अतनु राय